Patrika (Indore), 19th December 2025, Page- 02

आइआइटी इंदौर में एआइएमटीडीआर-2025 में हरित विनिर्माण पर हुआ गहन मंथन

पर्यावरण के संतुलन से ही सुरक्षित है उद्योग और तकनीक का भविष्य

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. उद्योग और तकनीक का भविष्य तभी सुरक्षित रह सकता है, जब विकास के साथ पर्यावरण संतुलन को प्राथमिकता दी जाए। इसी सोच के साथ आइआइटी इंदौर में 11 से 13 दिसंबर तक देश के सबसे पुराने और प्रतिष्ठित विनिर्माण सम्मेलन एआइएमटीडीआर 2025 का आयोजन किया गया। सम्मेलन का इस बार का मुख्य विषय 'हरित विनिर्माण' रहा, जिसमें पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों और टिकाऊ औद्योगिक विकास पर व्यापक चर्चा हुई।

सम्मेलन में देश-विदेश से आए शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों और उद्योग विशेषज्ञों ने औद्योगिक प्रदूषण को कम करने, संसाधनों के कुशल उपयोग और जलवायु परिवर्तन से निपटने के उपायों पर विचार साझा किए। तीन दिवसीय आयोजन में यह स्पष्ट संदेश उभरा कि भविष्य का उद्योग वही होगा, जो पर्यावरण के साथ सामंजस्य बनाकर आगे बढ़ेगा।

एआइ तेजी से बदल रहा है काम करने का तरीका

उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि परसिस्टेंट सिस्टम्स के संस्थापक और चेयरमैन डॉ. आनंद देशपांडे ने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) कार्यशैली में बड़ा बदलाव ला रहा है। उन्होंने माना कि कुछ पारंपरिक नौकरियों पर असर पड़ेगा, लेकिन इसके साथ ही नए अवसर भी पैदा होंगे। युवाओं को निरंतर नई स्किल्स सीखते रहने की सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि तकनीक के साथ खुद को अपडेट रखना आज की सबसे बड़ी जरूरत है।

अब तक का सबसे बड़ा एआइएमटीडीआर सम्मेलन

आइआइटी इंदौर में आयोजित यह सम्मेलन अब तक का सबसे बड़ा एआइएमटीडीआर रहा। इसमें देश और विदेशों से 650 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन के लिए प्राप्त शोध पत्रों में से 437 शोध पत्र स्वीकार किए गए, जिनमें 371 शोध पत्रों को विभिन्न तकनीकी सत्रों में प्रस्तुत किया गया। इसके साथ ही सम्मेलन में 16 प्रदर्शनी स्टॉल लगाए गए, जहां नई मशीनें, तकनीकें और अनुसंधान कार्य प्रदर्शित किए गए। अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों के 8 मुख्य व्याख्यान और 2 स्मृति व्याख्यान भी किए गए।

हरित विनिर्माण समय की आवश्यकता

समापन समारोह में मुख्य अतिथि नेट्रेक्स के निदेशक डॉ. मनीष जायसवाल ने कहा कि एआइएमटीडीआर जैसे सम्मेलन भारत में तकनीकी और औद्योगिक विकास को नई दिशा दे रहे हैं। उन्होंने ऑटोमोबाइल टेस्टिंग और रिसर्च के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों की जानकारी भी साझा की। आइआइटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास जोशी ने कहा कि हरित विनिर्माण अब विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता बन चुका है। इसका सीधा प्रभाव पर्यावरण, कृषि, खाद्य सुरक्षा और देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है।

2027 में आइआइटी हैदराबाद में होगा अगला संस्करण: सम्मेलन के दौरान यह घोषणा भी की गई कि एआइएमटीडीआर का हीरक जयंती संस्करण दिसंबर 2027 में आइआइटी हैदराबाद में आयोजित किया जाएगा।

शिक्षा और उद्योग के बीच मजबूत सेतु

सम्मेलन के आयोजन अध्यक्ष प्रो. नीलेश कुमार जैन ने कहा कि एआइएमटीडीआर-2025 से यह स्पष्ट है कि वैश्विक स्तर पर हरित और टिकाऊ विनिर्माण को लेकर गंभीरता बढ़ रही है। यह मंच शिक्षा और उद्योग के बीच मजबूत सेतु का काम कर रहा है। सह-आयोजन अध्यक्ष प्रो. आइए पलानी ने कहा कि ऐसे सम्मेलन शोध कार्यों को सीधे उद्योग से जोड़ते हैं, जिससे नई तकनीकें प्रयोगशालाओं से निकलकर जमीन पर लागू हो पाती हैं।